समकालीन कुंडलिया छंदों में नैतिकता एवं लोक - व्यवहार

डॉ. बिपिन पाण्डेय

मानव मात्र का हित साधन ही साहित्य का लक्ष्य है, जो आनंद द्वारा किया जाता है और लोक जीवन से अनुप्राणित होता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सबकर हित होई।।' कहकर साहित्य की महत्ता को स्पष्ट कर दिया है। साहित्य मनुष्य के हृदय को जाग्रत करता है, उसमें चेतना का स्फुरण करता है। अपनी संस्कृति के प्रति दृढ़ आस्था का भाव जगाता है। मनुष्य की सामाजिक उन्नति में साहित्य सहायक है। मनुष्य का आध्यात्मिक उन्नयन भी सत्साहित्य के बिना संभव नहीं। सामाजिक समरसता स्थापित करने में साहित्य की भूमिका निर्विवाद है।

नीति ,न्याय और उपदेशपरक कुंडलिया छंदों का संबंध मुख्यत: मूल्यों और मानदंड़ों से होता है, जो व्यक्ति में नैतिकता और न्याय प्रियता का संचार करने एवं सामाजिक विद्रूपताओं और विसंगतियों को दूर करने में सक्षम बनाते हैं तथा उचित-अनुचित का ज्ञान, कर्तव्य-बोध और सामाजिक समरसता की भावना का विकास, देश और समाज का पथ-प्रदर्शन, आत्मिक एवं भौतिक प्रगति में सहायक सिद्ध होते हैं।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक होता है कि व्यक्ति पहले अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करे और फिर उसको प्राप्त करने का प्रयास करे। यदि वह सपना ही नहीं देखेगा तो वह उसे साकार करने की चेष्टा कैसे करेगा। डॉ. कपिल कुमार ने यही संदेश देने की कोशिश अपने छंद के माध्यम से की है। लक्ष्य प्राप्ति की बेचैनी हमें कुछ कर गुज़रने के लिए प्रेरित करती है। अतः सपने देखना अत्यंत आवश्यक है। कवि कहता है कि यदि रात में देखे गए सपने की बात सुबह तक याद रहती है तो वह वह देखा गया सपना सच होता है।

सपना देखो हर घड़ी, हर पल तुम दिन रात ।
सच्ची होगी एक दिन, सपने की हर बात ॥
सपने की हर बात, सुमन की तरह खिलेगी।
परी-कथा से निकल, परी भी एक मिलेगी।
कहें 'कपिल' कविराय, मिले सपने में अपना ।
सुबह रहे जो याद, सत्य हो जाये सपना ॥

जीवन में जो कुछ भी प्राप्त होता है,वह सब हमारे कर्मों का फल होता है। जिसके कर्म अच्छे होते हैं वह निश्चित रूप से अनेकानेक सुख-सुविधाओं का भोग कर पाता है। गाफिल स्वामी जी ने लिखा है जिनके कर्म खोटे होते हैं वे हमेशा दुखी रहते हैं, उनके जीवन में कभी सुख-शांति नहीं रहती। व्यक्ति को अपने कर्मों का फल यहीं, इसी जन्म में भोगना पड़ता है इसलिए हमें सदैव अच्छे कर्म ही करने चाहिए।

करनी अच्छी जो करें, खायें मोहन भोग।
करते खोटे काम जो, दुःखी रहें वे लोग ॥
दुःखी रहें वे लोग, न देखे सुख से जीते।
हो कैसा भी काल, घूंट कड़वे ही पीते ।
कह 'गाफिल' कविराय, यहीं सब करनी भरनी।
अब भी जाओ चेत, करो कुछ अच्छी करनी ॥

त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने अपनी कुंडलिया में स्पष्ट किया है कि रत्नाकर तो एक ही होता है, उसमें पाए जाने वाले रत्न भी सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध होते हैं। अब यह व्यक्ति के ऊपर निर्भर करता है कि वह अपने लिए मोती चुनता है या सीप। बुद्धिमान लोग चुनाव करते समय सदैव सावधानी बरतते हैं और बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेते हुए अपने लिए उपयोगी और अच्छी चीज़ों को चुनते हैं जबकि मूर्ख लोग सीप और मूंगा पाकर ही खुश हो जाते हैं। इसमें रत्नाकर का कोई दोष नहीं है, रत्नाकर तो मूर्ख और ज्ञानी दोनों के लिए एक ही है, कौन ,क्या पाना चाहता है यह पाने वाले व्यक्ति की चाह तय करती है।

रत्नाकर सबके लिए, होता एक समान।
बुद्धिमान मोती चुने, सीप चुने नादान।।
सीप चुने नादान, अज्ञ मूंगे पर मरता।
जिसकी जैसी चाह, इकट्ठा वैसा करता।
'ठकुरेला' कविराय, सभी खुश इच्छित पाकर।
हैं मनुष्य के भेद, एक-सा है रत्नाकर।।

हमें सदैव वाणी पर संयम रखना चाहिए। बोलने में की गई असावधानी हमारे सामने समस्या बनकर खड़ी हो जाती है। हमारे द्वारा बोले गए शब्द कभी सामने वाले व्यक्ति के लिए शूल बन जाते हैं तो कभी फूल। वैशाली चतुर्वेदी जी ने इसी बात को कुंडलिया के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। मधुर वाणी व्यक्ति के हृदय को प्रफुल्लित कर देती है, वह व्यक्ति को अपना बना लेती है, बैरभाव को समाप्त कर देती है ; जबकि कटु वचन अपनों को भी दूर कर देते हैं, संबंधों में खटास पैदा कर देते हैं। कवयित्री के अनुसार जीवन में धैर्य और वाणी पर संयम बहुत जरूरी हैं।

वाणी से संयम हटे, चुभती बन कर शूल।
अगर सजे ये भाव से, बन जाती है फूल।।
बन जाती है फूल, हृदय को ये महकाती।
घोले खूब मिठास, सभी के ये मनभाती ।
मिट जाये सब बैर, समझ गर रख ले प्राणी।
जीवन में हो धैर्य, और संयम ।।

जिस व्यक्ति से हमारा स्वभाव मिलता है, गुण मेल खाते हैं उससे हमारे संबंध बहुत जल्द आत्मीयतापूर्ण हो जाते हैं। तारकेश्वरी 'सुधि' जी ने यही बात अपनी कुंडलिया के माध्यम से व्यक्त की है। मित्रता का आधार सदैव हमारी आपसी वे बातें होती हैं जो दोनों में सामान्य रूप से पाई जाती हैं। पद ,पैसा और रूप को देखकर बनाए जाने वाले संबंध कभी टिकाऊ नहीं होते लेकिन यदि संबंध गुणों और आदतों के कारण बने होते हैं तो फिर ऊँच-नीच, रुपया-पैसा,जाति-धर्म कभी आड़े नहीं आता।

रोके से रुकता नहीं, कभी प्रीति का भाव ।
ये खुद ही पहुँचे वहाँ, मिलता जहाँ सुभाव।।
मिलता जहाँ सुभाव, वहीं पर घर बन जाए।
कर देता मन मुग्ध, दिलों को ये हरषाए।
मिलें न बारम्बार, सभी को ऐसे मौके ।
सबका दिल लो जीत, रुको न किसी के रोके ।।

परमजीत कौर 'रीत' जी ने अपने छंद में व्यक्ति को एक सकारात्मक संदेश दिया है कि जब तक जीवन है तब तक व्यक्ति को कठिनाइयों का सामना तो करना ही पड़ता है। तूफ़ानों से टकराता हुआ दीपक हमें संदेश देता है कि हमें कभी भी हार नहीं माननी है। बुझने से पूर्व दिया फफकता है अर्थात उसकी लौ और तेज हो जाती है , इस बात को रीत जी ने एक नए रूप और सकारात्मक अर्थ में प्रस्तुत किया है। हमें आखिरी सांस तक जीवन की मुश्किलों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जब तक अंतिम साँस है, तूफानों से रार ।
जलता दीपक कह रहा, नहीं माननी हार ।।
नहीं माननी हार, मुझे जलते जाना है।
अपना तनिक उजास, जगत में बिखराना है।
लौ बढ़ जाती और, आखिरी जब हो दस्तक ।
आँख मिला तूफ़ान, लडूंगा साँसे जब तक ।।

समाज में सदैव से ऐसे लोग रहे हैं, जिनसे दूसरे की प्रगति देखी नहीं जाती और वे ईर्ष्याभाव के कारण कदम- कदम पर रोड़ा अटकाते रहते हैं।ऐसे लोगों की सोच छोटी और ओछी होती है और वे दूसरे का बनता हुआ काम बिगाड़ देते हैं, उन्हें इस काम में मज़ा आता है। डॉ. जगन्नाथ प्रसाद बघेल जी ने लिखा है कि ऐसे लोग दूसरे को कोई लाभ या खुशी मिलते नहीं देख पाते। उनके अंदर ईर्ष्याभाव जन्म लेने लगता है। अतः हमें ऐसे लोगों से दूरी बनाकर रखनी चाहिए।

बनता काम बिगाड़कर, जिसे नहीं संकोच ।
होता है केवल वही, जिसकी ओछी सोच ।।
जिसकी ओछी सोच, नीच की चाल चलेगा।
देख पराया लाभ, वही बेवजह जलेगा।
कह 'बघेल' कविराय, नीच से रखकर निजता।
कैसा भी हो काम, बिगड़ जाएगा बनता।।

व्यक्ति की किस्मत का निर्माण उसके कर्मों से होता है। यदि सौभाग्यशाली बनना है तो व्यक्ति को अपने कर्मों को सुधारना चाहिए। सद्कर्मी व्यक्ति के समक्ष किस्मत भी विनीत भाव से नत हो जाती है। डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा जी ने अपने छंद में लिखा है कि कर्मवीर को किस्मत भी हाथ बढ़ाकर सहारा प्रदान करती है। मंज़िलें स्वयं चलकर उसके पास आती हैं। अतः कठिनाई को अपने राह का रोड़ा नहीं अपितु अपने को निखारने और तराशने के एक अवसर के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

कठिनाई के सामने, झुके न जिनके माथ।
जोड़े हैं उनको सदा, क़िस्मत ने भी हाथ ।।
क़िस्मत ने भी हाथ, बढ़ाकर दिया सहारा।
मज़िल ने खुद राह, दिखाकर उन्हें पुकारा।
खिले खुशी के फूल, सरस बगिया मुस्काई।
सदा हुई निर्मूल, टिकी है कब कठिनाई।।

परिवार में छोटों और बच्चों में विकसित होने वाले संस्कार घर के मुखिया पर निर्भर करते हैं। शिवकुमार 'दीपक' जी मानना है कि यदि मुखिया ही अवगुणी होगा, बुराइयों को आत्मसात करने वाला और प्रश्रय देने वाला होगा तो फिर उसका परिवार कभी आदर्शों से युक्त नहीं बन सकता। युवा पीढ़ी का पथ-विचलन होने लगता है। वे नशे की लत लगा बैठते हैं ,घर में नाना प्रकार के रोग आसन जमाकर बैठ जाते हैं। अतः घर के मुखिया का अनुशासित और संस्कारवान होना आवश्यक है।

जिस घर के मुखिया हुए, अवगुण के शौकीन।
उस घर में आदर्श की, बंजर रहे जमीन ।।
बंजर रहे जमीन, सभी अंकुर मुरझाते ।
नशा करें भरपूर, रोग सारे लग जाते।
बनकर रहते बॉस, रहें कब घर में डर के?
बिगड़ा सब माहौल, नियम ढीले जिस घर के ।।

यदि व्यक्ति राह की परवाह किए बिना निरंतर आगे बढ़ता रहता है तो वह अपने लक्ष्य को एक न एक दिन प्राप्त कर ही लेता है। डॉ नलिन ने लिखा है कि उसी व्यक्ति का जीवन सफल माना जाता है जो अपने सपनों को साकार कर लेता है। 'डूबते को तिनके का सहारा' कहावत के माध्यम से कवि ने इस बात को स्पष्ट किया है कि मुसीबत के समय थोड़ी-सी सहायता व्यक्ति को उसके लक्ष्य पहुँचा देती है। कवि यह परामर्श भी देता है कि कैसी भी बात हो ,बोलने से पहले हमें उसे तौलना चाहिए। इससे आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहती है।

चाहे जैसी राह हो, रुकें नहीं यदि पाँव।
पा ही लेते हैं कभी, वे सपनों का गाँव।।
वे सपनों का गाँव, सफल है जीवन उनका।
कर देता है पार, डूबते को हर तिनका ।
कहें 'नलिन' कविराय, बात हो, बोलो कैसी।
तोलो हर इक बात, करो मत चाहे जैसी ।।

समय परिवर्तनशील है। हर बीता हुआ पल अतीत बन जाता है अतः अतीत को छोड़कर वर्तमान में जीने की कोशिश ही व्यक्ति के जीवन को खुशहाल बना सकती है और मंज़िल तक पहुँचने में भी सहायता मिलती है। महावीर उत्तरांचली जी का यह छंद कुछ इसी प्रकार का भाव व्यक्त कर रहा है। समय बहुत बलवान होता है, समय के आगे किसी की भी नहीं चलती। चाहे राजा हो या रंक समय के समक्ष सभी घुटने टेक देते हैं। अतः बीते हुए समय को यादकर जीना अपने जीवन को व्यर्थ करना है। लोक व्यवहार में भी अधिकांशतः यही दिखाई देता है कि जीवन में सफलता का मूल मंत्र यही है कि हम वर्तमान में जिएँ और भविष्य के विषय में चिंतन करते हुए उसे संवारने का प्रयास करें।

बीता है जो एक पल, कभी न आये हाथ।
सबसे अच्छा व्यक्ति वह, चले वक्त के साथ ।।
चले वक्त के साथ, जीत निश्चित ही जानो।
समय बड़ा बलवान, बात यह हरदम मानो।
महावीर कविराय, व्यर्थ में क्यों है जीता।
मत कर उसको याद, एक पल जो है बीता ।।

'लीक छाड़ि तीनिहुँ चलैं शायर सिंह सपूत।' वाली बात अपने छंद में व्यक्त करते हुए रघुविंद्र यादव जी लिखते हैं कि लीक से हटकर चलना वीरों की पहचान होती है। वह व्यक्ति जो अपने आदर्शों और सिद्धांतों से समझौता नहीं करता वह भी एक वीर होता है क्योंकि ऐसे व्यक्ति के एक -दो दुश्मन नहीं होते, पूरी दुनिया ही दुश्मन बन जाती है। इसलिए सच्चाई के मार्ग पर चलकर दुनिया को रास्ता दिखाना कभी भी आसान नहीं रहा है। उजाला करने के लिए दीपक को भी जलना ही पड़ता है।

चलना हटकर लीक से, वीरों की पहचान।
रहें उसूलों पर खड़े, दुश्मन बने जहान ।।
दुश्मन बने जहान, सत्य का साथ निभाते ।
बेशक जाये जान, वीर कब पीठ दिखाते ।
करने को आलोक, दीप को पड़ता जलना।
रहा नहीं आसान, राह पर सच की चलना ।।

सांसारिकता के फेर में फँसा व्यक्ति किस प्रकार अपना जीवन व्यर्थ गवाँ देता है यह राजकुमार 'राजन' जी के छंद से स्पष्ट है। वे लिखते हैं कि यदि व्यक्ति राम नाम का जप करे तो उसका उद्धार हो सकता है। यह जानते हुए भी व्यक्ति माया मोह में फँसा रहता है। जगत के दुखों से छुटकारा और प्रभु प्राप्ति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिसे प्रभु प्रेम की प्राप्ति हो जाती है उसे सब कुछ मिल जाता है। इस संसार में व्यक्ति का जन्म भौतिक चीज़ों को हासिल करने के लिए नहीं होता है वरन भक्ति में सराबोर होकर प्रभु प्राप्ति के लिए होता है। अतः तन-मन की खुशियों को प्राप्त करने के लिए मायाजाल को काटकर प्रभु राम की शरण में जाना ही होगा।

माया के ही फेर में, समय किया बेकार ।
नाम जपो यदि राम का, हो जाये उद्धार ।।
हो जाये उद्धार, जगत के दुख मिट जायें।
सब हो जाये प्राप्त, प्रेम यदि प्रभु का पायें।
'राज' कहे ये बात, सुखी हो जाये काया।
बनें राम के भक्त, त्याग कर ये धन-माया ।।

प्रत्येक मनुष्य इस संसार में आकर यह मेरा है, वह तेरा है करता रहता है तथा अभिमान का शिकार हो जाता है । राजेन्द्र बहादुर सिंह 'राजन' जी ने ऐसे ही लोगों को लक्ष्य करते हुए लिखा है कि जिस व्यक्ति को घमंड हो जाता है उसका तन-मन-धन सब कुछ नष्ट हो जाता है। ज़िंदगी रूपी उपवन को हरा-भरा बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि सभी अहंकार का त्याग करें। व्यक्ति के अंदर तेरा-मेरा का भाव तब तक बना रहता है जब तक उसे ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती।

तेरा अपना क्या भला, जिस पर करता दर्प।
अहंकार से क्या बड़ा, कोई दूजा सर्प ।।
कोई दूजा सर्प, डसे जो तन-मन-धन को।
जर्जर करता नित्य, जिन्दगी के उपवन को।
'राजन' माया, मोह, तमस में नहीं सवेरा ।
जब तक मिले न ज्ञान, मिटे क्या मेरा-तेरा ।।

जीवन जीना एक कला है और हर व्यक्ति को यह कला नहीं आती। जो व्यक्ति जीवन जीने की कला सीख जाता है उसका प्रत्येक पल शुभता से युक्त हो जाता है। राजेश प्रभाकर जी ने लिखा है कि उसी का जीवन सफल माना जाता है जो इस कला में महारत हासिल कर इतिहास रच देता है और अपना नाम अमर कर लेता है। लोगों का प्रेरणास्रोत बनने के लिए यह आवश्यक होता है कि हम सारी मुश्किलों को भूलकर जीवन को एक उत्सव की तरह मनाते हुए जिएँ।

जीवन जीने की कला, जिसने भी ली सीख ।
उसके शुभ शुभ हों यहाँ, हर दिन, हर तारीख ।।
हर दिन, हर तारीख, सफल जीवन हो जाता।
रचकर वह इतिहास, अमरता जग में पाता।
बनो प्रेरणा स्रोत, जिंदगी एक तपोवन।
उत्सव औं' आनन्द, मनाये सारा जीवन ।।

जीवन में सरलता बहुत जरूरी है ,चूँकि आज का व्यक्ति न केवल बनावटी और कृत्रिम जीवन जीता है वरन छल-कपट से भी युक्त है। शून्य आकांक्षी जी ने लिखा है कि आज के व्यक्ति के जीवन में शारीरिक और मानसिक रोगों ने इसीलिए डेरा डाला हुआ है क्योंकि व्यक्ति पापाचार के रास्ते पर चल पड़ा है। व्यक्ति को अपने मनोविकारों पर नियंत्रण रखते हुए छल-कपट से दूर रहने का प्रयास करना चाहिए।

छल-कपटों की जिंदगी, जिये जा रहे लोग।
इसीलिए ही बढ़ रहे, तन के, मन के रोग।।
तन के, मन के रोग, विकारों का है धावा।
बढ़ते पापाचार, फूटता रहता लावा।
कहें 'शून्य' कविराय, अधम अगनी लपटों की।
छोड़ो मनोविकार, जिंदगी छल-कपटों की ।।

जीवन में दान की महत्ता को प्रतिपादित करता साधना ठकुरेला जी का एक छंद अवलोकनीय है जिसमें वे यह बताती है कि केवल दान करना ही पर्याप्त नहीं होता है। दान करते समय हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि वह सदैव सुपात्र को ही दिया जाए। यह सांसारिक जीवन चार दिनों का है इसलिए हमें अपने लोक-परलोक को सुधारने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने आपको माया-मोह से मुक्त रखें। दान करना माया-मोह से मुक्ति का परिचायक होता है। आत्मकल्याण की प्राप्ति के इच्छुक लोगों को जीवन में दान की महिमा समझनी चाहिए।

महिमा न्यारी दान की, पर इतना लो जान।
पात्र सही हो दान का, हो इसकी पहचान ।।
हो इसकी पहचान, दान से छूटे माया।
बने लोक परलोक, चार दिन की है काया।
कहे 'साधना' सत्य, महकती जीवन क्यारी।
करे आत्म कल्याण, दान की महिमा न्यारी ।।

जब सूरत और सीरत के बीच में चुनाव करने की बारी आती है तो व्यक्ति प्रायः गलती कर देता है। कौआ और कोयल दोनों ही काले होते हैं लेकिन दोनों कीषआवाज़ में ज़मीन-आसमान का अंतर होता है। कोयल की मधुर आवाज़ जिससे सभी प्यार करते हैं इस बात का परिचायक है कि सूरत की अपेक्षा सीरत वरेण्य होती है। ऋता शेखर मधु जी ने अपनी कुंडलिया में व्यक्त किया है कि हमें सदैव सद्भावी रहना चाहिए और व्यवहार नम्र रखना चाहिए। ये सभी मानव के गहने माने जाते हैं। अतः व्यक्ति को अपनी सूरत को चमकाने के स्थान पर सीरत को सुधारने पर काम करना चाहिए।

काली कोयल सुर मधुर, गुण का करे बखान ।
सूरत से सीरत भली, देती है संज्ञान ॥
देती है संज्ञान, सदा सद्भावी रहना ।
नम्र रहे व्यवहार, यही मानव का गहना ।
मनहर हो जब पुष्प, पुलक जाता है माली ।
कानों में रस घोल, कूकती कोयल काली ॥

संगति का प्रभाव सभी पर पड़ता है लेकिन सज्जन और साधु को दुष्ट प्रवृति वाले लोग प्रभावित नहीं कर पाते। 'चंदन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुजंग' की बात को डॉ. थम्मन लाल वर्मा जी ने अपने छंद में स्थान देते हुए लिखा है कि जैसे सर्पों के संपर्क में आने के बाद भी चंदन की विषैला नहीं होता उसी प्रकार सज्जन और साधु भी होते हैं वे कुसंग के प्रभाव से मुक्त रहते हैं। सज्जन अपने मन में मैल नहीं रखते और वे किसी प्रकार का कुचक्र भी नहीं रचते।

होता सज्जन, साधु का, चंदन तुल्य स्वभाव ।
जिस पर दुष्ट प्रवृत्ति का, पड़ता नहीं प्रभाव ।।
पड़ता नहीं प्रभाव, न चन्दन कभी विषैला ।
कहें उसी को संत, न हो जिसका मन मैला ।
जो गंगा सम पाप, विमल धारा में धोता ।
रचता नहीं कुचक्र, 'विकल' वह सज्जन होता ॥

'स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती। और भय बिनु होय न प्रीति।' गोस्वामी तुलसीदास जी की इन उक्तियों को अपने छंद में समाहित करते हुए डॉ. रंजना वर्मा जी लिखती हैं इस दुनिया के संबंध स्वार्थ पर आधारित होते हैं। यह बात सभी ज्ञानी,ध्यानी और साधु-संत समझाते आए हैं। रास्ते में आने वाली विघ्न-बाधाओं को हमें दूर करना ही होता है। दण्ड विधान बनाया ही इसीलिए गया है जिससे स्वछंदता और उच्छृंखलता पर लगाम लगाई जा सके।

कहते सन्त सुजान जन, दुनिया की यह रीति ।
स्वार्थ भरे सम्बन्ध सब, भय बिन होय न प्रीति ॥
भय बिन होय न प्रीति, रीति यह सारे जग की ।
मिटतीं कब बिन दण्ड, विघ्न बाधाएँ मग की ।
भीति बिना स्वच्छन्द, आचरण निन्दित रहते ।
भय से होती प्रीति, सन्त जन सारे कहते ॥

शिवकुमार चंदन जी कहते हैं कि एक शिल्पकार जब पत्थर को तराश कर मूर्ति का निर्माण करता है तो वह प्रस्तर खंड कलाकार की कला से सजीव हो जाता है। इतना ही नहीं वह प्रस्तर शिला पूज्य भी हो जाती है यदि उससे भगवान की मूर्ति का निर्माण करता है तो। जब तक उस शिलाखंड को तराश कर शिल्पकार मूर्ति नहीं तैयार करता तब तक उस पत्थर की कोई कीमत नहीं होती। लोग उसे ठोकर मारते रहते हैं। अतः कष्ट ही जीवन की असली परीक्षा हैं। जो इन कष्टों को झेल लेता है वह पूजनीय बन जाता है और जो कष्टों कठिनाइयों को देखकर विचलित हो जाता है वह जीवन भर अपमान झेलता रहता है।

प्रस्तर में भी संचरित, हो जाते हैं प्राण ।
शिल्पकार के हाथ जब, करें मूर्ति निर्माण।।
करें मूर्ति निर्माण, पूज्य वह हो जाती है।
जब तक प्रस्तर खण्ड, शिला ठोकर खाती है।
बने कसौटी कष्ट, कष्ट का अपना है स्तर ।
प्रतिभा पाती प्राण, मान पा जाता प्रस्तर ॥

इस संसार में व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है। जब व्यक्ति इस संसार को छोड़कर जाता है तो उसके कर्म इस दुनिया को उसकी याद दिलाते हैं। हरिओम श्रीवास्तव जी अपने छंद में इसी बात को स्पष्ट करते हैं। व्यक्ति के इस संसार से जाने के बाद कोई उसको याद करके नहीं रोता है। सभी उसके द्वारा किए गए सद्कर्मों को याद करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि हम ज़िंदगी में कुछ अच्छे कर्म कर लें, दूसरों के काम आ जाएँ। कुकर्म करके अपने जीवन को व्यर्थ न करें।

कर ले ऐसे कर्म कुछ, जिन्हें रखे जग याद ।
रह जायेंगे कर्म ही, मर जाने के बाद ॥
मर जाने के बाद, कौन किसको है रोता ।
कर कर खोटे कर्म, व्यर्थ क्यों जीवन खोता ।
रह जायेगा नाम, पीर दूजों की हर ले ।
जीवन के दिन चार, धन्य यह जीवन कर ले ॥

व्यक्ति को मान-सम्मान की प्राप्ति कर्मों से होती है। मान-सम्मान माँगने से नहीं मिलता। कर्मवीर इंसान ही बुलंदियों को छूता है और वही सफल इंसान भी माना जाता है। पुष्प लता शर्मा जी ने लिखा है कि जिसे खुद पर भरोसा होता है वही सफलता प्राप्त कर पाता है। हमें हर हाल में आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए। जो आत्मविश्वास से लबरेज होता है वही समस्याओं का समाधान कर आदर्श स्थापित कर पाता है। जो अपने पुरुषार्थ के बल पर दूसरे की राह के काँटे हटाकर उन्हें आगे बढ़ने में मदद करता है, लोगों के चेहरे पर मुस्कान ले आता है वही मान-सम्मान का अधिकारी होता है।

माँगे से मिलता कहाँ, कभी मान सम्मान।
कर्मवीर चढ़ता शिखर, सफल वही इंसान ॥
सफल वही इंसान, भरोसा जिसको खुदपर।
अंधियारा कर दूर, दमकता बनकर दिनकर।
काँटे चुनकर 'पुष्प, लगाता वही छलाँगे।
जग को दे मुस्कान, अश्रु निज आँचल माँगे ॥

डॉ बिपिन पाण्डेय ने अपनी कुंडलिया में स्पष्ट किया है कि जीवन की सभी मुसीबतों की जड़ हमारी अज्ञानता और हमारे अंदर छुपी बुराइयाँ हैं। हमें अपने अंतर्मन की शुचिता पर ध्यान देने की जरूरत होती है पर हम बाह्य काया को ही धोने-पोंछने एवं चमकाने में लगे रहते हैं। अंतर्मन की शुद्धता ही हमारे जीवन में खुशियाँ ला सकती है। शुद्ध और पवित्र हृदय में ही ईश्वर का वास होता है किंतु संसार इस बात को नहीं समझ पाता। इधर-उधर भटकता हुआ विभिन्न तीर्थ स्थलों ,नदियों और कुंडों के चक्कर लगाता रहता है। वह कभी भी अपने मन छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष जैसे अवगुण दूर करने का प्रयास नहीं करता।

तन का धोना व्यर्थ है, दूर करो मन मैल।
परिवर्तन होगा तभी, टूटे दुख की शैल ॥
टूटे दुख की शैल, बहे खुशियों का निर्झर।
आते हैं प्रभु पास, जिंदगी जिन पर निर्भर।
समझ न पाते सत्य, यही रोना सब जन का।
करते हैं पाखंड, मिटाते मैल न मन का ॥

इस संसार में बवाल का मुख्य कारण हमारा चंचल मन है। इसलिए हमें अपने मन को अनियंत्रित होने और गड़बड़ करने से रोकना चाहिए । मुरारि पचलंगिया जी लिखते हैं कि आपसी लड़ाई मन के कारण ही होती है। मन की चाल सदैव उल्टी ही होती है जो हमारे लिए समस्याएँ पैदा करती रहती है। अतः हमें मन पर नियंत्रण बनाए रखना बहुत जरूरी है।

मन चंचल मन बावरा, रखना इसे सँभाल ।
ये जब भी गड़बड़ करे, दुनिया करे बवाल ॥
दुनिया करे बवाल, कभी ठन जाय लड़ाई।
मन की उलटी चाल, कभी भी रास न आई।
कहता हूँ कर जोड़, पड़े संकट में जीवन।
समझाते हैं संत, बावरा है चंचल मन ॥

आपसी भाईचारा और सद्भाव को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि हम एक दूसरे के धर्म और धार्मिक ग्रंथों का आदर करें और उनमें कही गई बातों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। रंजन कुमार झा जी लिखते हैं कि दुनिया में भारत का नाम तभी ऊँचा होगा अर्थात देश तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ेगा जब हम एकजुट होकर कोशिश करेंगे। अगर हम धर्म के आधार पर बँटे रहेंगे और लड़ते-झगड़ते रहेंगे तो पिछड़े रह जाएँगे। हमें जीवन रूपी मग पर सद्भाव के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

गीता-सी वाणी करें, धारें हृदय कुरआन ।
सदा रहेगा एक फिर, अपना हिन्दुस्तान ॥
अपना हिन्दुस्तान, बनेगा ऊँचा जग में।
रखें अगर सदभाव, जिन्दगी रूपी मग में।
कह 'रंजन' कविराय, हमेशा है वह जीता।
जिसका मन कुरआन, और वाणी है गीता ॥

प्रेम क्या है और जीवन में प्रेम की महत्ता क्या है ? पर प्रकाश डालते हुए राहुल शिवाय जी लिखते हैं कि सच्चा जीवन वही है जहाँ प्रेम होता है। प्रेम के बिना जीवन अपूर्ण एवं एकांगी होता है। प्रेम प्राणियों के प्राणों को एक बना देता है। बस, कहने के लिए वे दो अलग-अलग शरीरों में होते हैं। प्रेम एक अहसास होता है जो व्यक्ति के हृदय में स्वयं समाहित हो जाता है अर्थात प्रेम की अनुभूति कराने की आवश्यकता नहीं होती है। सच्चे प्रेम की प्राप्ति जीवन को धन्य कर देती है।

जीवन सच्चा है वही, जहाँ प्रेम का वास ।
नयन-हृदय दोनों बसे, प्रेम वही अहसास।।
प्रेम वही अहसास, स्वयं जो हृदय समाये।
दो प्राणी के प्राण, एक जो सखे बनाये।
कहता सखे 'शिवाय', प्रेम जग में है पावन।
सच्चा पाकर प्रेम, सफल होता है जीवन ॥

'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा' का उद्घोष करता शशि पुरवार जी का छंद शिक्षा देता है कि जीवन में संगति अत्यंत प्रभावकारी होती है। यदि व्यक्ति को मन मुताबिक साथी मिल जाता है तो उसके सभी मनोवांछित कार्य पूरे हो जाते है। पर साथ ही साथ शशि जी यह परामर्श भी देती हैं कि हमें कभी अभिमान नहीं करना चाहिए, और न ही कर्म करने से डरना या जी चुराना चाहिए। संगति हमारी बुद्धि का मार्जन करती है। जैसे लोगों का साथ होगा, वैसी ही हमारी बुद्धि विकसित होगी, इसीलिए अच्छे लोगों का साथ खोजने की सलाह दी जाती है।

संगति का होता असर, वैसा होता नाम ।
सही रहगुजर यदि मिले, पूरे होते काम ॥
पूरे होते काम, कभी अभिमान न करना।
जीवन कर्म प्रधान, कर्म से कैसा डरना।
मिले सही यदि साथ, सदा हो मार्जन मति का।
जीवन बने महान, असर ऐसा संगति का ॥

हरि नारायण सिंह 'हरि' जी अपनी कुंडलिया में स्पष्ट करते हैं कि हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए किसी को नुकसान पहुँचाने की जरूरत नहीं होती है अपितु अपनी योग्यता और प्रतिभा को विस्तारित कर अपना लक्ष्य प्राप्त करना होता है। हमें अपने आपको परनिंदा से भी दूर रखना होता है। परनिंदा करने वाले

व्यक्ति का अधिकांश समय दूसरे के अवगुणों को खोजने और लोगों को बताने में ही निकल जाता है। हमें स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ करने का प्रयास करना चाहिए। सभी को अपना मानते हुए अपने आपको छल-कपट और द्वेष से दूर रखना चाहिए।

आगे बढ़ने के लिए, लंबी करो लकीर।
परनिंदा की त्याग कर,हरो सभी की पीर ॥
हरो सभी की पीर, स्वार्थ से ऊपर उठकर ।
सब ही तेरे मीत, रहो मत उनसे कटकर।
कर सबका सन्मान, द्वेष को जो भी त्यागे।
जीवन उसका सफल, बढ़े वह आगे आगे ॥

व्यक्ति को वह सब कुछ प्राप्त नहीं हो पाता जिसे वह जीवन में पाना चाहता है। लेकिन जो भी भाग्य से प्राप्त होता है उसमें अपने आपको संतुष्ट रखना चाहिए। किरण सिंह जी अपनी कुंडलिया छंद में इसी बात पर बल देती हैं। जो भी हमें प्राप्त होता है उसके लिए अपने भाग्य को दोषी भी नहीं मानना चाहिए। हमें जीवन में वही मिलता है ईश्वर की दृष्टि में हम जिसके योग्य होते हैं। इससे हमें दुखी और निराश नहीं होना चाहिए वरन जीवन में कहाँ से और कैसे खुशियाँ प्राप्त हो सकती हैं, उन्हें हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए।

जो कुछ मिला नसीब से, हो जा उसमें तुष्ट।
सबको सब मिलता नहीं, क्यों होता है रुष्ट॥
क्यों होता है रुष्ट, कोसना क्यों किस्मत को।
हम जिसके थे योग्य, दिया ईश्वर ने हमको।
जीवन से दो चार, चुराकर खुशियाँ ले लो।
खुशी-खुशी लो बाँट, ईश ने तुम्हें दिया जो ॥

प्रत्येक समय एक जैसा नहीं होता। समय बदलता रहता है और बदले हुए समय का प्रभाव हमारे जीवन पर भी पड़ता है। जे सी पाण्डेय जी ने अपनी कुंडलिया में लिखा है कि कभी हमारी निंदा होती है तो कभी हमें सम्मान मिलता है। ये सब समय का फेर होता है। अतः हमें समय की चाल को समझते हुए आगे बढ़ना चाहिए। यदि आप समय के साथ कदम-ताल नहीं करते हैं तो पीछे छूट जाते हैं। समय आपका साथ नहीं देता है। इससे जीवन की प्रगति बाधित होने लगती है और व्यक्ति कमजोर और प्रभावहीन होने लगता है। इससे समाज में उसे सम्मानीय स्थान प्राप्त नहीं हो पाता।

मिलते हैं ताने कभी, और कभी सम्मान ।
समय बदलता ही रहे, रखना इतना ध्यान ॥
रखना इतना ध्यान, आप खुद को पहचानें।
समय उन्हीं के साथ, चले जो इसको जानें।
कहता है 'जगदीश, कमल कीचड़ में खिलते।
कब कीचड़ के हाथ, कहो कमलों से मिलते ॥

'सबहिं नचावत राम गुसाईं' की उक्ति के भाव को अपने अंदर समाहित किए गिरधारी सिंह गहलोत 'तुरंत' जी का छंद अवलोकनीय है जिसमें वे कहते हैं कि मनुष्य व्यर्थ में ही अपनी उपलब्धियों पर गर्व करता है। जीवन में जो भी घटित होता है,उसके पीछे ईश्वर होता है। अतः थोड़ी सी सफलता या धन की प्राप्ति पर इतराने की जरूरत नहीं होती है। व्यक्ति को कभी भी अपने आपको शक्तिसंपन्न नहीं समझना चाहिए। मनुष्य के हाथ में कुछ भी नहीं होता है। जो भी घटित होता है, वह ईश्वरीय इच्छा का परिणाम होता है। मनुष्य तो मात्र माध्यम होता है। यदि ईश्वर की त्योरी चढ़ जाए तो वह कभी भी सफलता को विफलता में परिवर्तित कर सकता है।

डोरी उसके हाथ में, गर्व मनुज का व्यर्थ ।
किंचित धन क्या मिल गया, समझे हुआ समर्थ ॥
समझे हुआ समर्थ, जगत है बस में मेरे।
बन्धु ज्ञान संज्ञान, नहीं कुछ कर में तेरे।
कह 'तुरंत' कविराय,चढ़े यदि प्रभु की त्योरी ।
जब चाहे दे दंड,हाथ में उसके डोरी।।

कल्पना रमानी जी अपने छंद में लोगों को यह समझाने का प्रयास करती हैं कि लोग बुरे नहीं होते, परिस्थितियाँ उन्हें बुरा बनाती हैं। लोग उन्हें बुरे रास्ते पर चलने के लिए विवश कर देते हैं। सबल और सक्षम लोग जब उनके अधिकार छीन लेते हैं तो उन्हें अपने अधिकारों की पुनर्प्राप्ति हेतु कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़ता है जिससे उनके बारे में लोगों की धारणा बदल जाती है। दुनिया की नज़र में उनका जीवन कलंकित हो जाता है। लेकिन जिन्हें हम कुख्यात मानते हैं वे ऐसे क्यों बने उसके पीछे के समाजशास्त्रीय कारणों पर दृष्टिपात करने की आवश्यकता होती है।

बुरे न होते लोग सब, सुनो हमारी बात।
कर देते बेबस इन्हें, सब नामी विख्यात ॥
सब नामी विख्यात, छीन लेते हक इनके।
बदले की ये आग, बुझाते बेघर बनके।
मिलता है धिक्कार, कलंकित दुख हैं ढोते।
लेकिन ये कुख्यात, हमेशा बुरे न होते ।।

हमें अपने दिल की गोपनीय बात सदैव उसी व्यक्ति को बतानी चाहिए जो उसे गुप्त रख सके। हर एक से अपने दिल की बात कहना उचित नहीं होता है। उषा पाण्डेय 'कनक' जी कहती हैं कि हमें अपने हालात की चर्चा कभी भी ऐसे व्यक्ति के साथ नहीं करना चाहिए जिसके पेट में कोई बात पचती ही नहीं है। वह आपकी बात लोगों तक पहुँचाने में देर नहीं करता और आपको अवांछित स्थिति में डाल देता है। इस बुरी आदत के शिकार व्यक्ति को कभी भी अपने दिल की बात नहीं बतानी चाहिए।

पचती जिसके पेट में, कभी न कोई बात।
जाहिर उससे तुम नहीं, कर देना हालात ॥
कर देना हालात, रहे कब केवल उस तक।
बाँटे वह चहुँ ओर, करा दे तुमको अकबक।
कहे 'कनक' सुन बात, नहीं यह आदत जँचती ।
खोल न दिल के राज, बात है जिसे न पचती ॥

इन्द्र बहादुर सिंह 'इन्द्रेश' जी स्पष्ट करते हैं कि जीवन में कब क्या प्राप्त होगा और कब क्या आपके पास से चला जाएगा, यह सब भाग्य की अनुकूलता और प्रतिकूलता पर निर्भर करता है। भाग्य का निर्माण ईश्वरीय इच्छा का प्रतिफल माना जाता है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसके आगे तो किसी की भी नहीं चलती। वह चाहे तो राई को पहाड़ बना दे और पहाड़ को पल में धूल में बदल दे। सब कुछ ईश्वर पर छोड़कर हमें अपना कर्म करना चाहिए और हमें अपने कर्म का फल एक न एक दिन अवश्य प्राप्त होगा।

आएगा सब दौड़कर, भाग्य अगर अनुकूल।
आया भी जाये चला, अगर समय प्रतिकूल।।
अगर समय प्रतिकूल, जान ईश्वर की लीला।
राई बने पहाड़, बना दे पर्वत ढीला।
कह कविवर 'इन्द्रेश, कर्म फल पा जाएगा।
होगी चिन्ता दूर, समय अच्छा आएगा।।

वरिष्ठ कुंडलियाकार रामपाल शर्मा 'काक' जी कहते हैं कि हमें अपने अवगुणों को त्याग कर गुणों को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए। सांसारिक बाधाएँ कभी बंधन न बने, व्यक्ति में अनुराग की भावना विकसित हो इसके लिए सदैव प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति गुण-अवगुण का सम्मिश्रण होता है। ऐसा नहीं होता है कि किसी व्यक्ति में केवल गुण ही हों या फिर अवगुण ही हों। हमें अवगुणों को छोड़कर गुणों का ग्राहक बनना चाहिए।

गुण के गाहक सब बनो, अपने अवगुण त्याग।
भव बाधा बांधे नहीं, विकसित हो अनुराग ।।
विकसित हो अनुराग, प्रीत हित शक्ति सम्भालो।
करो विश्व-विश्वास, पेट भर भोजन पालो ।
कहे काक कविराय, गिरो मत अवगुण सुन के।
सोचो समझो खूब, बनो फिर गाहक गुण के ।।

नीति,न्याय, धर्म, अध्यात्म और दर्शन के साथ-साथ उपदेशपरक बातें हमें न केवल अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराने के साथ-साथ हमें नैतिकता का पाठ पढ़ाती हैं अपितु हमें संस्कारवान बनाकर जीवन लक्ष्य की प्राप्ति में भी सहायक होती हैं। करणीय और अकरणीय के भेद को समझने में भी इनसे मदद मिलती है।समकालीन कुंडलियाकारों ने नीति, न्याय और लोक व्यवहार को अपने अनेकानेक छंदों का विषय बनाकर समाज को एक सकारात्मक दिशा देने की कोशिश की है। जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए पाथेय के रूप में ऐसी बातें न केवल हमें प्रेरणा प्रदान करती है अपितु साध्य की प्राप्ति के लिए साधन की पवित्रता की आवश्यकता को भी उद्घाटित करती हैं।

डॉ. बिपिन पाण्डेय
रुड़की, उत्तराखंड